पहला अध्याय

१.० : दुष्यंतकुमार - व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

१.१ - प्रास्ताविक ।

१.२ - दुष्यन्तकुमार का जन्म एवं जन्मस्थान ।

१.३ - दुष्यन्तकुमार के माता-पिता ।

१.४ - दुष्यन्तकुमार का बचपन ।

१.५ - दुष्यन्तकुमार की प्रारम्भिक शिक्षा ।

१.६ - दुष्यन्तकुमार का विवाह ।

१.७ - दुष्यन्तकुमार की उच्च शिक्षा ।

१.८ - दुष्यन्त कुमार का स्वभाव ।

१.९ - दुष्यन्तकुमार की नौकरियाँ ।

१.१० - दुष्यन्तकुमार का देहान्त ।

१.११ - दुष्यन्तकुमार कवि के रूप में

१.११.१ - सूर्य का स्वागत ।

१.११.२ - आवाजों के घेरे ।

१.११.३ - जलते हुए वन का बसन्त ।

१.१२ - दुष्यन्तकुमार - जगलकार के रूप में ।

१.१२.१ - सायें धूप ।

१.१३ - दुष्यन्तकुमार - नाटककार के रूप में ।

१.१३.१ - और मसीहा मर गया ।

१.१३.२ - मत के कोण ।

१.१३.३ - एक कंठ विषपायी ।

१.१४ - दुष्यन्तकुमार - उपन्यासकार के रूप में

१.१४.१ - छोटे छोटे सवाल ।

१.१४.२ - आंगन में एक वृक्ष ।

१.१४.२ - दुहरी जिन्दगी ।

१.१५ - नि ष्क र्ष ।

पहला अध्याय

दुष्यन्तकुमार - व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

१.१ प्रास्ताविक -

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागी आजादी के बाद के प्रमुख साहित्यकारों में से एक हैं। वे एक साथ सफल कवि,उपन्यासकार और नाटककार के रूप में भी प्रसिध्द रहे हैं। पर वास्तव में हिन्दी गजलकार के रूप में ही दुष्यन्तकुमार का नाम चर्चित रहा हैं। फिर भी हिन्दी पाठक उनके काव्य, नाटक, रेडियो-नाटक, एकांकी-नाटक,उपन्यास,संस्मरण,समीक्षा आदि से भी परिचित रहे हैं। अभिव्यक्ति के नये माध्यमों की तलाश करनेवाले दुष्यन्तकुमार ने हिन्दी गजल को एक नयी दिशा प्रदान की। दुष्यन्त जी ने अपनी जिन्दगी में जो अनुभव किया, उसी की अभिव्यक्ति उनके साहित्य में दिखाई देती है, इसलिये उनमें नये कवियों की अपेक्षा वैयक्तिकता अधिक पायी जाती हैं।

स्वर्गीय दुष्यन्तजी की काव्ययात्रा आजादी के बाद ही शुरु होती हैं। दुष्यन्तजी के काव्य में अनुभूतियों की प्रधानता हैं और इसलिये उनका काव्य बहुत सक्षम बना हैं। दुष्यन्तजी नयी कविता के कवि हैं, लेकिन नयी कविता की मान्यताओं की ओर आकर्षित नहीं हैं। उनके काव्य के विषय ऐसे हैं,जो पाठकों के हृदय को झकझोर देते हैं। `सूर्य का स्वागत`, `आवाजों के घेरे`, जलते हुये वन का वसंत`, `साये में धूप` आदि दुष्यन्तजी के प्रमुख काव्य संग्रह हैं। स्वर्गीय दुष्यन्तजीने काव्य के साथ उपन्यास,नाटक,एकांकी-नाटक,संस्मरण, समीक्षा साहित्य आदि साहित्य-विधापर भी कलम चलाई हैं। `एक कण्ठ विषपायी` उनका एक ऐसा काव्य-नाटक हैं,जिसमें उन्होंने पौराणिक कथा को आधुनिक सन्दर्भों में ढाला है।

इसके अतिरिक्त ' और मसीहा मर गया ', ' मन के कोण ' उनकी प्रमुख नाट्य-कृतियाँ हैं ।

आजादी के बाद देश में जो स्थितियाँ उत्पन्न हुयीं उन्हीं का चित्रण दुष्यन्त ने अपने दोनों लघु उपन्यासों में बडी मार्मिकता के साथ किया है । जिन्दगी का अंतरविरोध,उसकी सारी विषमताएँ, शिक्षा संस्था में चलनेवाली राजनीति, जमींदारों का जीवन, अपने असली रूप में उनके उपन्यासों में व्यक्त हुआ है । दुष्यन्तजी के प्रमुख तीन उपन्यास हैं ।

१) छोटे-छोटे सवाल
२) आँगन में एक वृक्ष
३) दुहरी जिन्दगी ।

सार यही कि दुष्यन्तकुमार के व्यक्तित्व के कई आयाम पाये जाते हैं । जैसे गजलकार,उपन्यासकार,कवि,नाटककार । इससे यह साबित होता है, कि दुष्यन्तकुमार एक ऐसे बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न साहित्यकार थे, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की ।

१.२ दुष्यन्तकुमार का जन्म एवं जन्मस्थान--

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागी का जन्म २७ सितम्बर १९३१ में हुआ । उनका पूरा नाम था ' दुष्यन्त नारायणसिंह त्यागी ' । दुष्यन्तजी को बचपन में इसी नाम से पुकारा जाता था । सन १९४६ में हायस्कूल में प्रवेश लेते समय उनके मित्र रवीन्द्रनाथ के परामर्श से उन्होंने अपने नाम से ' नारायण ' शब्द को निकालकर ' कुमार ' शब्द जोड दिया । आगे चलकर उनके मित्र, रिश्तेदार सभी उन्हें दुष्यन्तकुमार के नाम से पुकारने लगे थे । प्यार से सब लोग उन्हें ' दुश्शी ' भी कहा करते थे ।

उत्तरप्रदेश के जिला बिजनौर में नजीबाबाद नामक एक तहसील है । इसी

तहसील के राजपुर कस्बे के निकटवर्ती गाँव 'नवावा' में दुष्यन्तजी का जन्म हुआ। डॉ.हरिशरण शर्मा राजपुर कस्बे के प्राकृतिक सुंदरता के बारे में लिखते हैं --
" यहाँ प्रत्येक शाम अनंत सौन्दर्य लेकर आती है। कस्बे के चारों ओर खडे खजूर के महसूस से पेड अंधकार के बढते बढते अपना दायित्व निर्वाह करते से सतर्क पहरियों की तरह तन जाते हैं। माननी नदी का जल सुनहरा हो उठता है,तथा नदी के कूलों में खडे जामून,नीम,खजूर आदि के वृक्ष सामुहिक नृत्य की मुद्रा धारण किए हुए से प्रतीत होते हैं।"[१] ऐसे रमणीय वातावरण में दुष्यन्त जी का बचपन बीता।

१.३ दुष्यन्तकुमार के माता पिता --

दुष्यन्तजी के पिता का नाम श्री भगवत सहाय था और माताजी का नाम रामकिशोरी। ये भूमिहार ब्राह्मण थे। भगवत सहायजी जमींदार होने के कारण चौधरी नाम से पुकारे जाते थे। इनके दो विवाह हुए थे। प्रथम पत्नी से एक पुत्र प्रकाश नारायण तथा दो लडकियाँ पैदा हुयीं। दोनों शैशवकाल में ही मर गयी थीं। कुछ समय बाद प्रथम पत्नी के मर जाने से सहायजी ने दूसरा विवाह किया। उनकी दूसरी पत्नी का नाम था रामकिशोरी। इनके पाँच लडके और दो लडकियाँ हुयीं। इनमें से दो बालक,दो बालिकाओं का शैशवकाल में ही देहान्त हो गया। आगे चलकर महेन्द्र नारायणसिंह और प्रथम पत्नी का पुत्र प्रकाशनारायण सिंह दोनों भी चल बसे। इस प्रकार दूसरी पत्नी से पैदा हुए दुष्यन्त नारायणसिंह तथा प्रेमनारायण शेष रहे। कुछ ही समय बाद पिता भगवत सहाय की भी मृत्यु हो गयी। माता रामकिशोरी स्वयं को संभाले हुयी थी कि अचानक २९ दिसम्बर १९७५ को दुष्यन्तजी का निधन हो गया।

दुष्यन्तजी के पिता भगवत सहाय जी को प्रथम ससुर से काफी जमींदारी दहेज के रूप में मिली थी। उनके परिवार में किसी प्रकार के भौतिक सुखों की कमी नहीं थी। ऐसे संपन्न परिवार में दुष्यतजी का जन्म हुआ था। दुष्यन्तजी को भौतिक सुख,माँ का प्यार सभी कुछ मिला, लेकिन पिता के प्यार में उन्होंने कमी महसूस की। इस बात का प्रमाण उनका उपन्यास 'आंगन में एक वृक्ष' है। इसमें उनके परिवार का ही चित्रण हुआ है।

१.४ दुष्यन्तकुमार का बचपन --

दुष्यन्तजी का बचपन नवादा, राजपुर, मुजफ्फर नगर में बीता। छोटे दुष्यन्त बड़े आकर्षक थे। पूरा रंग, छोटी-छोटी आँखें, मोटे गाल, लम्बी लटोंवाले बालक दुष्यन्तजी को खेलने-कूदने का कोई शौक नहीं था। बहुत ही नटखट, शरारती, लापरवाह दुष्यन्त सदैव प्रसन्न चित्त रहते।" बालक दुष्यन्त बड़े ही निर्भीक, विद्रोही, और अलमस्त स्वभाव के थे। झूठ बोलना, बहाने बनाना, किसी के बुलानेपर 'अभी आया' कहकर फिर न आना उनके स्वभाव में रम गया था।"[२] वे बचपन में स्वाभिमानी हठवादी थे। इस बारे में प्रेम त्यागी लिखते हैं " वे मुजफ्फर नगर में सातवीं मे पढते थे और महेन्द्रभैय्या दसवीं में। एक दिन ड्राईंग मास्टर ने दुष्यन्त भैय्या को 'अरे फैटर के भाई फैटर' कहते हुए दो-चार तमाचे लगा दिये। भैय्या सीधे बड़े भाई के पास गये और अड गये जब तक उससे बदला नहीं लेगा मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।"[३] जब दुष्यन्त जी को पता चला कि उस ड्राईंग टीचर पर दो चार हाथ पड़े हैं। तभी वे स्कूल गये। इस तरह दुष्यन्तजी बचपन में अति हठवादी थे।

१.५ दुष्यन्तकुमार की प्रारंभिक शिक्षा --

दुष्यन्तजी की प्रारंभिक शिक्षा अलग-अलग स्थानों में हुयी। ६ वर्ष की आयु में दुष्यन्त जी ने 'नवादा प्राथमिक विधालय' में प्रवेश लिया। सातवीं कक्षा मुजफ्फर नगर से तो आठवीं कक्षा नटौर के माध्यमिक विधालय से उत्तीर्ण की। फिर सन १९४८ में 'चंदौसी इंटर कॉलेज' में ११वी कक्षा दूसरे दर्जे में उत्तीर्ण की। उन्हें अध्ययन में कम दिलचस्पी थी। कक्षा में बैठकर शरारतें करना, अध्यापकों को चिढाना उन्हे विशेष रूप से भाता था। इस बात की उन्हें सजा भी मिलती थी।

१.६ दुष्यन्तकुमार का विवाह --

दुष्यन्तजी ने किशोरावस्था में ही प्रेम के क्षेत्र में प्रवेश पा लिया था। उनके व्यक्तित्व में आकर्षक शक्ति थी। प्रभावी व्यक्तित्व एवं बात करने का ढंग

आदि से प्रभावित होकर नटटौर के एक त्यागी परिवार की कन्या दुष्यन्त जी के प्रेम में इतनी बह गयी कि दुष्यन्तजी से उसने विवाह करने का निर्णय भी किया। दुष्यन्त जी भी उसे पसंद करते थे, किन्तु मर्यादाओं के कारण वे अपने इस प्रेम को पूर्ण न कर सके।

दुष्यन्तजी का विवाह १८ वर्ष की आयु में सटारनपुर जिले के श्री सूरजभान त्यागी की पुत्री राजेश्वरी के साथ हुआ। विवाह के समय राजेश्वरी १०वीं कक्षा उत्तीर्ण थी। पति दुष्यन्त जी की सलाहपर उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी और हिन्दी एवंम मनोविज्ञान विषय लेकर एम.ए.की उपाधि प्राप्त की। फिलहाल राजेश्वरी तात्याटोपे नगर भोपाल के उच्चस्तर माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी की व्याख्याता हैं। दुष्यन्त जी को परंपरायें एवं मान्यताएँ पसंद नहीं थी। माता-पिता का मन रखने के लिये उन्होंने हिन्दू परंपराओं के अनुरूप विवाह किया। नारी संबंधी उनके विचार प्रगत थे। वे नारी को समान अधिकार देने के पक्ष में थे। दहेज-प्रथम के विरोधी दुष्यन्त का दाम्पत्य बन्धनों में पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति त्याग,बलिदान आदि में विश्वास था। उनका संपूर्ण वैवाहिक जीवन सुखी संपन्न था। वे अपनी धर्मपत्नी राजेश्वरी को `राजों` कहकर पुकारते थे। उनका परिवार दो लड़के तथा एक लड़की से महकता रहा।

१.७ दुष्यन्तकुमार की उच्च शिक्षा --

दुष्यन्तजी १९५२ में हिन्दी,इतिहास,दर्शनशास्त्र इन विषयों को लेकर प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए.तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। फिर १९५४ में एम.ए. हिन्दी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। उनका किशोरावस्था का शरारतीपन महाविद्यालयीन जीवन में भी बराबर बना रहा। आर्थिक संपन्नता के कारण दुष्यंतजी में कॉलेज के विद्यार्थियों जैसी मस्ती,आवारगी, आ गई थी। वे कॉलेज के अध्यापकों को पीरियड के समय परेशान करते थे। प्रयाग विश्वविद्यालय की एक बात

उनके मित्र रवीन्द्रनाथ त्यागी लिखते हैं " डॉक्टर रसाल जब ' शिवराज भूषण ' पढाते थे,तो वह उनकी ओर देख देखकर मुँह बनाया करता था।"[४] ऐसी आवारगी दुष्यंतजी में आ गई थी । वे हमेशा नये कपडे,नये जूते पहनते थे । कॉलेज जीवन में ही दुष्यन्तजी को साहित्य से लगाव हो गया था । इस काल में अध्ययन के साथ उन्होंने अपने कवि मन को भी विकसित किया । कुछ समय के लिये व ' परिमल ' के सदस्य रहे थे । सूर,तुलसी, निराला के साहित्य का दुष्यन्तजी पर अच्छा प्रभाव रहा । डॉ.हरिवंशराय बच्चन उन्हें विशेष प्रिय थे । उनका अध्ययन क्रम कभी रुका नहीं । एम.ए.के बाद उन्होंने बी.टी. की परीक्षा उत्तीर्ण की । ज्ञान को बढाने के लिये अंग्रेजी साहित्य में एम.ए.करने का निश्चय किया था कि वे इस दुनिया से चल बसे ।

१.८ दुष्यन्तकुमार का स्वभाव --

दुष्यन्तजी में गुण अवगुण दोनों थे । व्यंग्य-विनोद से अपने आसपास हँसी मजाक का वातावरण निर्माण करना वे अच्छी तरह से जानते थे । उनमें काफी कमियाँ थीं । पर वे उन कमियों को हँसी से ढँकते थे । मित्रों से कभी कहीं मुलाकात हो गयी तो वे पुरानी मस्ती से पेश आते । थोडा सा परिचय होनेपर वे सीधे चुल्हे चौके तक चले जाते और घर-मालिक से लेकर घर के सभी लोगों की खैरीयत पूछते । इतने वे खुले दिल के थे । दोस्तों,परिचितों,की कोई समस्या हो तो वे कहते " अच्छा आप बेफिकिर रहिए मैं अभी फला के पास जाकर यह कहता हूँ और उनका स्कूटर तब तक दौडता ही रहता जब तक वह काम पूरा नहीं हो जाता ।"[४]

दुष्यन्तजी अपने आपसे भी मजाक करते । सस्पेंड होनेपर वे शान से कार में घुमने कविता लिखने और दोस्तों द्वारा हाल पूछनेपर कहते --' यार,अभी एक उपन्यास पूरा हुआ है । कुछ दिन और सस्पेंड रहा तो दूसरा भी लिख डालूँगा ।'[५] उन्हें अपने अच्छे-बुरे की कोई परवाह नहीं थी । वे स्कूटर या कार से शहर में घूमते और अपने दर्द को हँसी के साथ पी लेते । वे सिर्फ ईश्वर को मानते थे । भाग्यपर विश्वास न रखकर वे अपने कर्मों में विश्वास रखते थे । निराश होना उन्हे कतई

पसंद नहीं था । अपने साथ वे दूसरों को भी महत्वाकांक्षी योग्य बनाना चाहते थे ।

दुष्यन्तजी बडे साफ दिल के आदमी थे । वे बहुत जल्दी खुश और नाराज भी हो जाते थे । सफल कवि बन जाने की उनकी तीव्र इच्छा थी । सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के शब्दों में उसकी हवस दुनियादारी की हवस थी । वह सब कुछ पा लेना चाहता था । कभी बच्चों की तरह मचलकर, कभी जूझकर, जब उसका चाहा नहीं हो पाता तो वह उदास होता ।'[६] मीठा बोलकर काम बनाना उन्हें पसंद नही था । वे जो कुछ कहते साफ-साफ कहते थे । यह उनकी विशेषता मानी जाती है । सामाजिक पाखंड, आडम्बर के वे सख्त खिलाफ थे । पाखंडियों की पोल खोलना उनकी आदत थी ।

मित्रों के घर मेहमान की तरह न बैठकर हँसी-मजाक करके वे वातावरण को सहज बनाने में बडे माहिर थे । उनकी यारी-दोस्ती बडी बेमिसाल रही है । वे मित्रों को जितना चाहते थे, मित्र उससे अधिक उन्हें चाहते थे । कमलेश्वर जी उनके बहुत आत्मीय रहे हैं । उनके यहाँ दुष्यन्तजी का प्रवेश व्यंग्य-विनोद से होता । एक बार दुष्यन्तजी कमलेश्वर के घर पहुँचे । कमलेश्वरजी अपनी धर्मपत्नी शाता वर्मा से बोले -' जाओ शाता । जूते पानी में भीगों दो । शाता आश्चर्य में पड गयी तो वे बोले --' साले को मारने के लिये, बिना बताए चला आता है । पहले से कोई खोज खबर ही नहीं रहती ।' इस प्रकार उनकी यारी-दोस्ती में व्यंग्य विनोद चलता था ।

दुष्यन्तजी बडे शौकीन किस्म के आदमी थे । सुरा-सुन्दरी से लेकर हर छोटे बडे शौक को उन्होंने पूरा किया था । वे अपने जीवन को नये रंगों में ढालना चाहते और सदा परिवर्तन के हिमायती रहे । स्कूटर, कार दौडाते घूमना, इससे उससे मिलना, दोस्तों के साथ पार्टियाँ करना, अच्छे नये सूट पहनना, कहीं कोई झगडा खडा करके स्वयं तटस्थ रह जाना, अपने बच्चोंपर प्यार उँडेलना, इन सबके साथ कविता करना, उनका खास स्वभाव था । जब उनके हम उम्र नौजवान भविष्य बना रहे थे, उसी समय दुष्यन्तजी कविता-सृजन में खो गये थे । हिन्दी गजल की नई दिशाएँ खोज रहे थे ।

सार यही कि दुष्यन्तजी ने जिन्दगी को अपने ढंग से जिया हैं ।

१.९ दुष्यन्तकुमार की नौकरियाँ --

दुष्यन्तजी को सर्वप्रथम ऑल इंडिया रेडिओ दिल्ली में नौकरी मिली । इसके पहले वे किरपुर प्राइवेट इंटर कॉलेज में अध्यापन का कार्य करते थे । फिर सन १९६० में उनका तबादला आकाशवाणी के भोपाल केन्द्र में हो गया । यहाँ उन्होंने सहायक प्रोड्यूसर की हैसियत से कुछ रेडिओ-रूपक, ध्वनि नाटक लिखे । आगे चलकर वे भाषा-विभाग में सहायक संचालक बन गये । इस विभाग में उनका अपने सचिव से वैचारिक मतभेद हो गया था । वादविवाद में उन्होंने सचिव से कहा कि सरकारी क्षेत्र में यह घटियापन जबतक खत्म नहीं होता तब तक मैं खामोश कैसे रहूँ । सचिव ने जब उन्हें नौकरी से निकालने की धमकी दी, तब दुष्यन्तजी ने शान से कहा आपकी यह बात बेमानी है । जितनी तनखाह आप मुझे देते हैं, उससे तो मेरा दारू का खर्च भी पूरा नहीं होता । मैं आपकी या किसी की नौकरी नहीं करता । मैं सिर्फ अपनी कलम की नौकरी करता हूँ ।"[७] इस तरह दुष्यन्तजी ने नौकरी के काल में अपना साहस भी दिखाया था । वरिष्ठों से मतभेद होने के कारण उन्हें बरखास्त भी किया गया था । बरखास्तगी के काल में वे कृषि व्यवसाय करने लगे थे । आगे चलकर दुष्यन्त जी को मध्यप्रदेश के भाषा विभाग में सहायक संचालक की नौकरी मिल गयी । अंततक इसी पद पर रहकर भाषा विभाग को अपनी सेवाएँ अर्पित करते रहे ।

१.१० दुष्यन्तकुमार का देहान्त --

दुष्यन्तजी का देहान्त 30 दिसम्बर १९७५ को दिल का दौरा पड़ने से रात ढाई बजे हो गया । उस समय उनकी आयु केवल ४४ वर्ष की थी । साहित्य - प्रेमियों को आज इस बातपर विश्वास नहीं होता । दुष्यन्त जी मृत्यु से पहले अपनी पत्नी राजो को साथ लिये मित्रों से मिलने गये थे । रात को एक बजे घर लौटनेपर उनके सीने में अचानक हल्का दर्द होने लगा । एक माह पहले ऐसा ही सीने में हल्का

दर्द हुआ था । तब वे गाँव से लौट रहे थे । उस समय सभी ने उनको इलाज कराने की सलाह दी थी । लेकिन दुष्यन्तजी ने लापरवाही दिखाई । दर्द बढनेपर पत्नी ने दवा पिलाई, सेक दिया, डॉक्टर को बुलाया । पर सारी कोशिशों के बावजूद रात ढाई बजे उनका देहान्त हो गया । दुष्यन्तजी के निधन से उनके आने-कों मित्रों को बडा भारी सदमा पहुँचा ।

रवीन्द्रनाथ त्यागी लिखते हैं मरना तो सबको है, पर उसका एक वक्त होता है । मगर दुष्यन्त बेवफा ही चला गया । वक्त की पाबंदी न उसने जीने में की और न मरने में ।"[८] शिवमंगलसिंह सुमन जी ने दुष्यन्त जी के निधनपर कहा --' दुष्यन्त के अचानक चले जाने के समाचार से मैं स्तब्ध रह गया । अभी भी इस समाचार पर विश्वास नहीं हो पा रहा । यह एक ऐसा वज्रपात हुआ है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं .... निश्चय ही उनके अभाव की पूर्ति हो सकना संभव नहीं ।"[९]

इससे यह साबित होता है कि दुष्यन्त कुमार लोगों में कितने प्रिय थे, उनका व्यक्तित्व कितना बहुआयामी था । दुष्यन्तजी के निधन से हिन्दी साहित्य जगत में एक कमी-सी आ गयी । अंत में हम कमलेश्वर के शब्दों में यह कह सकते हैं कि दुष्यन्तकुमार परदेसी से दुष्यन्तकुमार त्यागी तक का यह थकता हुआ छोटा-सा सफर इसलिये महान है कि वह एक साहित्यकार बनकर आया था और एक आदमी बनकर चला गया ।"[१०]

१.११ दुष्यन्तकुमार कवि के रूप में --

स्वर्गीय दुष्यन्तजी का कविरूप आजादी के बाद ही दिखाई देता है । तत्कालिन जीवन की झाँकी उनके काव्य में दिखाई देती हैं । उनके काव्य में प्रयोगशीलता, प्रगतिशीलता का अभास भी पाया जाता है । मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से उन्होंने काव्य विषय चुन लिये हैं । उनके काव्य के विषय दिल को छू लेते है और उनमें गहराई भी हैं । कवि दुष्यन्त नयी कविता के कवि हैं, परन्तु नयी कविता की मान्यताओं का उन्हें आकर्षण नहीं हैं । वे नयी कविता की रूढियों से मुक्त रहे हैं ।

जब दुष्यन्त अपनी प्रारंभिक कविताओं के साथ साहित्य जगत में आये तब काव्य क्षेत्र में प्रगतिवाद का निर्माण हो रहा था । इस बाद से भी वे प्रभावित हुए । अभावग्रस्त जीवन से भागनेवाले मजदूर को वे रोकते हैं । संघर्ष करने के लिये कहते हैं ।

' पेट पीठ है मिले हुए पर जीवन से मत भाग ' [११]

दुष्यन्तजी ने अपनी प्रारंभिक रचनाओं में छायावाद की रुमानी शैली को भी अपनाया हैं, जिसमें प्रेम का स्वर प्रधान हैं ।

' प्राण तुम्हारे पथ में मैंने
विश्वासों के जाल बिछाए
सजल प्रतीक्षा करते करते
मेरे तो लोचन पथराए । ' [१२]

सार यही कि उनकी आरंभिक कविताओं में प्रेम के अंतर्गत आशा-निराशा, वेदना, करुणा आदि प्रवृत्तियों का विवेचन हुआ है ।

१.११.१ ' सूर्य का स्वागत '

कवि दुष्यन्तजी ' सूर्य का स्वागत ' इस काव्य संग्रह के प्रकाशन से काव्य क्षेत्र में महत्व का स्थान बना पाये है । उनका यह काव्य संग्रह १९५७ में प्रकाशित हुआ, जिसमें दुष्यन्त जी ने अपने अनुभवों के साथ सामाजिक समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की हैं । ' सूर्य का स्वागत ' एक बेचैन कवि की काव्यकृति हैं, किन्तु उसकी बेचैनी किसी सामाजिक संघर्ष का परिणाम न होकर वैयक्तिक आंतरिक द्वन्द्व का परिणाम हैं । ' [१३]

इस कृति में दुष्यन्तजी ने मध्यमवर्गीय मनुष्य के जीवन को दिखाकर मानसिक संघर्ष का विवेचन किया हैं । इस कृति की प्रथम रचना में उन्होंने लिखा हैं कि घृणा, नफरत इतनी बढ गयी हैं, कि मनुष्य के मधूर आत्मिक संबंध टूट गये हैं । मनुष्य केवल अपना सुख देखता है, परहित उसके लिये न के बराबर हैं । मनुष्य स्वार्थी वृत्ति से प्रेरित

होकर कार्य करने लगा है । ऐसी स्थिति में आज मनुष्य परिवर्तन चाहता है । समाज में एक घुन्न बिखराव है । दबी हुयी इच्छाओं से मनुष्य कुंठीत हो जाता है । सही समय पाकर ये इच्छाएँ प्रकट होना चाहती हैं । तभी हृदय में दर्द जगता है । इन दबी हुयी इच्छाओं का दुष्यन्त जी ने सुन्दर वर्णन किया है ।

" मेरी कुंठा रेशम के कीडों सी
ताने-बाने बुनती
तडप - तडप कर
बाहर आने को सिर धुनती ।" १४

दुष्यन्त जीवन में संघर्ष को आवश्यक मानते हैं । जीवन में आये संकटों से संघर्ष न करके पलायन करना उचित नहीं है । कठीण परिस्थितियों से सामना करके आगे बढना यही मनुष्य जीवन का नियम है । इसी का नाम जिन्दगी है । ' आ मेरी जिन्दगी ' कविता में कवि ने उपर्युक्त विचारों को प्रकट किया है । दुष्यन्तजी मानते हैं कि दु:ख में ही सुख छिपा रहता है । जिसने जीवन के दु:खों से सामना नहीं किया, उसका जीवन मिथ्या है, नीरस है ।

" खण्ड-खण्ड होकर जिसने
जीवन विष पिया नहीं
सुखमय संपन्न मर गया जो जग में आकर
रिस रितकर जिया नहीं
उसकी मौलिकता का दाम निरा मिथ्या है ।" १५

' नयी पीढी के गीत ' में कवि कहते हैं कि मनुष्य को विश्वास खोना नहीं चाहिये । जीवन में आज नहीं तो कल सफलता तो मिलेगी ही । रात बीतनेपर सुबह होती ही है इसलिये सफल होने का विश्वास खोना नहीं चाहिये ।

" तुम आज अगर रोते हो तो कल गा लोगे
तुम बोझ उठाते हो, तूफान उठा लोगे ।" १६

इस प्रकार दुष्यन्तजी ने इस कृति में घृणा, स्वार्थी वृत्ति, विषमता, जीवन संघर्ष, दु:ख में ही सुख, विश्वास आदि बातों के संबंध में अपने विचार प्रकट किये हैं।

१.११.२ आवाजों के घेरे --

इस कृति में विविध विषयों की ५१ रचनाएँ है। दुष्यन्तजी ने इसमें जीवन संबंधी अनेक प्रश्नों को सुलझाया हैं। इस कृति में दुष्यन्त दिखाते हैं कि मध्यमवर्गीय मनुष्य के जीवन में सामाजिक विषमताएँ, छोटा-बडा, बेईमानी, धोखा, अत्याचार हैं। इन्हीं बातों का कवि विरोध करता है और विद्रोह करके समाज में परिवर्तन लाना चाहता हैं। सामाजिक कटूता से मनुष्य की इच्छाएँ लगभग दूर जाती हैं। यह सब देखकर कवि समाज में बदलाव लाने के लिये तडपता हैं। समाज परिवर्तन के लिये लोगों को अपने पास बुलाता है --

> मिनो। मुझसे हमदर्दी है,
> मेरे बेचैनी का कारण समझो। -बूझो
> बावो।" १७

दुष्यंतजी का काव्य काल के अनुसार नई कविता के अंतर्गत आता हैं। लेकिन उसमें नई कविता संपूर्ण विशेषताएँ नहीं मिलती। उसमें बहुत-सा बदलव है। जैसे उन्होंने अपनी कविता में व्यक्तिपर इतना बल नहीं दिया जिससे कि कविता का मूल लक्ष्य समाज से हट जाए। इसके विपरित नई कविता के कवियों ने व्यक्तिपर अधिक बल दिया हैं।

दूसरी बात यह कि नई कविता का कवि परंपरागत बन्धनों को तोडना चाहता हैं। कवि की यह प्रवृत्ति सामाजिक असंतोष के कारण बन गई हैं। परिणाम स्वरूप वह सुखवाद पसंद करने लगा हैं। इस सुखवाद एवं भोगवाद प्रवृत्ति के कारण कवि जीवन के सुखद सपने देखता हैं, कटूता से सामना नहीं करता। इस प्रवृत्ति को दुष्यन्त श्रेष्ठ नहीं मानते। उनके विचारों में उचित यही हैं कि अभावग्रस्त, कटू, असंतोषी जीवन हँसते हुए जिए और हर दु:ख दर्द को शांति से सहे।

" यह कि चुपचाप जिए जाएँ
प्यास पर प्यास जिए जाएँ
काम हर एक किए जाएँ ।" १८

दुष्यन्तजी राजनीति में डूबे लोगों के कारनामों को, उनके छलकपट को अच्छी तरह से जानते थे । ऐसे लोगों के बीच उनका उठना-बैठना भी था । यह सब देखकर उन्होंने ' दूसरा संदर्भ ' कविता में राजनैतिक लोगों के कारनामों पर व्यंग्य किया । इस काव्य संग्रह पर गांधीवाद का प्रभाव भी दिखाई देता हैं । दुष्यन्तजी ने सत्य, अहिंसा इन तत्वों का विवेचन किया तथा गांधी हत्या की निन्दा भी की है । उन्हें हिंसक तत्व पसंद नहीं थे । इस संग्रह की अंतिम रचना हैं --" गौतम बुध्द से ", जिसमें दुष्यन्तजी ने बुध्द के जीवन समाधान का विरोध किया हैं । दुष्यन्त मानवता के भूखे हैं, भूखे व्यक्ति को बुध्द के विचार उचित नहीं लगते, इसलिये दुष्यन्तजी ने बुध्द के विचारों की आलोचना की हैं ।

सार यही कि इस कृति में सत्य ,अहिंसा, राजनीति का विरोध, सामाजिक विषमता के प्रति असंतोष, मध्यम वर्ग के प्रति सहानुभूति आदि तत्थ्य पाये जाते हैं ।

१.११.३ <u>जलते हुए वन का वंसत</u> --

यह दुष्यन्तजी का तीसरा काव्य संग्रह हैं, जिसमें ४५ रचनाएँ हैं । इसमें दुष्यन्तजी ने मनुष्य की परेशानी, पीडा, संबंधो के खोखलेपन, राजनीतिक, सामाजिक मूल्यों की हार आदि बातों को सरल भाषा में व्यक्त किया है । इसके तीन खण्ड हैं -- इतिहास, बोध, देशप्रेम, चकवात, आदि ।

कविने प्रथम खण्ड में यह दिखाया हैं कि परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से मनुष्य का व्यक्तित्व प्रखर बन जाता हैं । परिस्थितियों के योग-संयोग से मनुष्य क्या से क्या बन जाता हैं । इसी बात को वे ' योग संयोग ' में स्पष्ट करते हैं । कवि के अनुसार जीवन में कडे प्रहार, चोटें सहने से व्यक्तित्व निखर जाता है ।

" मैंने प्रहार नहीं किया
सिर्फ चोटें सही
केवल हँसकर
अब मेरे कोमल व्यक्तित्व को
प्रहारों ने कड़ा कर दिया हैं ।" [१९]

' परवर्ती प्रभाव ' कविता में दुष्यन्तजी ने समाज की टुटी हुई स्थिति को व्यक्त किया हैं । आज मनुष्य समाज में रहकर भी समाज से अलग हुआ है । सद्भाव, प्यार, मानवता आदि को वह लगभग भूल गया है । समाज में अन्याय, अत्याचार, बढ गया है । दूसरों का दु:खदर्द सुनने के लिये किसी के पास वक्त नहीं हैं । सब अपना स्वार्थ देखते हैं । इससे समाज में बिश्वराव आ गया है ।

' आत्मालाप ' में दुष्यन्तजी ने अपने अधिकारी मित्र के बदले हुये व्यवहार की निन्दा की हैं, तो

'अस्तिवोध' कविता में मनुष्य अपने अस्तित्व के लिये कुछ भी करने को तैयार रहता है, यहाँ तक कि वह वक्त आनेपर व्यवहार, सिध्दांत को भी तोड देता हैं । यह दिखाया हैं ।

' बसंत आ गया ' इस खंड की अंतिम रचना है , जिसमें व्यक्ति जीवनयापन के लिये अपना संपूर्ण जीवन कैसे नष्ठ करता है । इस बात की ओर संकेत किया गया हैं ।

इस संकलन का दूसरा खंड है --' देशप्रेम ' जिसमें १३ रचनाएं हैं । इसमें कविने ' देशप्रेम, देशभक्ति, देशद्रोह, जनता की स्थिति, मंत्रियों के क्रियाकलाप, चुनाव और भ्रष्टाचार, झूठे आश्वासन, युध्द की आवश्यकता आदि विषयों की सूक्ष्म, सांकेतिक, प्रतीकात्मक व कही-कहीं सीधी अभिव्यक्ति की है ।" [२०] इस संग्रह की ' तुलना ' कविता में दुष्यन्तजी ने दिखाया हैं कि चुनाव के समय राजकीय दल जनता को सेवा करने के लिये आगे आ जाते हैं, वे मीठी बातें करते हैं । झूठे आश्वासन देते हैं । कवि कहते हैं कि इनसे बेहतर तो निम्न वर्ग अच्छा हैं, क्योंकि यह वर्ग मानवता के करीब हैं । वे राजकीय दल की तरह छलकपट, झूठे आश्वासन का सहारा नहीं लेता ।

' चक्रवात' इस संकलन का तीसरा खंड है । जिसमें विषयों की विविधता है । इस खंड में कवि परंपराओं से मुँह मोड लेते भी है,और कुछ समय बाद वे परंपराओं की प्रतीक्षा भी करते हैं । सार यही कि दुष्यन्तजी ने इसमें देशप्रेम की भावना को व्यक्त किया है । मन की अपवित्रता पर दु:ख किया है तथा मानव की समस्याओं से परिचित कराया है ।

१.१२ दुष्यन्तकुमार गजलकार के रूप में --

१.१२.१ ' साये में धूप ' दुष्यन्तजी का अंतिम काव्य संग्रह है,जिसमें ५२ गजले है । इसका प्रकाशन १९७५ में हुआ । गजल एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा है ,परन्तु दुष्यन्तजी गजल को स्वतंत्र साहित्यिक विधा नहीं मानते । वे गजल को नयी कविता की विधा मानते है । मई के सारिका अंक में ' मेरी गजले ' में दुष्यन्तजी ने लिखा है कि ' गजल एक स्वतंत्र चीज है । मैं उसे नयी कविता की एक विधा तक मानने को तैयार हूँ ।' २१

गजल ऊर्दू साहित्य की प्रमुख विधा है । इसका संबंध सात-आठ सालों से हिन्दी से जुड गया है । आरंभ में नयी कविता के कवियों ने हिन्दी पाठकों को गजल से परिचित कराया,लेकिन उन्होंने गजल की हिन्दी में चर्चा नहीं की । गजल को हिन्दी में चर्चित करने का श्रेय दुष्यन्तजी को मिलता है । दुष्यन्तजी ने गजल को ऊर्दू के हुस्न-इश्क क्षेत्र से निकाला और मनुष्य की पीडा को व्यक्त करने का एक माध्यम बनाया । यही दुष्यन्तजी की हिन्दी गजल को मौलिक देन है ।

' न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे ।
ये लोग कितने मुनासिब है,इस सफर के लिये ।' २२

यहाँ दुष्यन्तजी ने स्पष्ट किया है कि लोगों का स्वप्न था कि आजादी के बाद अपने अरमानों को पूर्ण करेंगे, देश को ऊँचा उठायेंगे,गरीबी,नहीं रहेंगी । लेकिन आजादी के बाद लोगों का स्वप्न साकार न हो सका । आज भी लोगों को

फटेहाल जिन्दगी दिखाई देती हैं। इस गजल में गरीबी की ओर संकेत किया हैं। उनकी कुछ गजलों में तो देशप्रेम कूट-कूट कर भरा हैं। वे गुलमोहर भारत के लिये जीना-मरना श्रेष्ठ समझते हैं।

" जिये तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिये।" २३

उन्होंने अपनी गजलों में साधारण व्यक्तियों की दीन-हीन दशा का भी चित्रण किया। वे अभावग्रस्त लोगों में संघर्ष करने का आत्मविश्वास जगाते हैं। अभावों में संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। दुःखी पीड़ित लोगों को सब्र करने का संदेश देते हैं।

" भूख हैं तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ
आजकल दिल्ली में हैं, जेरे बहस ये मुद्दआ।" २४

उनकी गजलों में पीड़ितों की दशा, अभाव, समाज, राजनीति, का भी चित्रण मिलता हैं। दुष्यन्तजी ' मेरी गजलें ' में लिखते हैं ' समाज का जूझना और हटता रूप, राजनीति और राजनीतिज्ञों का मुल्क और समाज के साथ सुलूक। इंसान यानी आवाम की जिन्दगी जरूरतें और उसके खतरे ... इन सबको मैंने इन गजलों में बाँधा है।" २५

सार यही कि दुष्यन्तजी के गजलों में समकालीन वातावरण चित्रित हुआ हैं।

१.१३ दुष्यन्तकुमार नाटककार के रूप में --

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागीजी ने केवल उपन्यास, काव्य, गजलें ही नहीं लिखी, बल्कि अपनी सशक्त लेखनी से नाटयकृतियाँ भी प्रस्तुत की हैं।

नाटक -` और मसीहा मर गया

एकांकी - नाटक -` मन के कोण `

काव्य - नाटक -` एक कंठ विषपायी आदि उनकी नाटयकृतियाँ है । इन नाटयकृतियों का संक्षेप में परिचय देकर हम उनके नाटककार के रूप को उजागर करेंगे ।

१.१३.१ ` और मसीहा मर गया --

यह दुष्यन्तजी का एक रेडिओ-नाटक है। इसकी कथावस्तु का मूल आधार उनका उपन्यास ` छोटे-छोटे सवाल` है । भोपाल आकाशवाणी के प्रसारण के लिये दुष्यन्तजी ने इस कृति का निर्माण किया था इसमें आठ दृश्य हैं ।यह नाटक रिकार्ड करते समय समय की सीमा का ध्यान रखा गया है ।

उत्तरप्रदेश के जिला बिजनौर के राजपुर नामक कस्बें में एक हिन्दू इंटर कॉलेज है । कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष लाला हरीचंद, उपाध्यक्ष चौधरी नत्थुसिंह, सेक्रेटरी गनेशीलाल तथा प्राचार्य उत्तमचंद हैं । कॉलेज में कुछ शिक्षकों की नियुक्तियाँ होनेवाली हैं । मीटिंग में अध्यक्ष हरीचंद राजेश्वर ठाकूर को चुनते हैं । गनेशीलाल और नत्थुसिंह अपने-अपने आदमियों के नाम आगे करते हैं । उनमें विवाद होता है । इसलिये अध्यक्ष हरीचंद सत्यव्रत को चुनते हैं जो भारतीय संस्कृति को पसंद करता हैं ।

कॉलेज में कृषि योजना के नामपर ग्रामीण छात्रों का शोषण होता है । प्राचार्य सत्यव्रत को वहाँ जाने से मना करते हैं,जहाँ संस्था की आलोचना होती हैं । मीटिंग में कॉलेज के लिये होस्टल का प्रस्ताव रखा जाता है, जिसमें वार्डन के रूप में सत्यव्रत को चुना जाता है । सत्यव्रत का कमेटी के मेम्बरों पर विश्वास है । ईमानदारी के कारण सत्यव्रत कॉलेज-कमेटी के मेम्बरों के जाल में फँस जाता है । बीच में कृषि-योजना और होस्टल के भोजन संबंधी प्रश्न उठते हैं ।

नाटक के अंत में राजेश्वर ठाकूर को गोपनीय खबर मिलती हैं कि सत्यव्रत को कॉलेज से हटाया जा रहा हैं । इसपर विद्यार्थी जुलुस निकालते हैं,जिसमें सत्यव्रत

की पुन: नियुक्ति की माँग रहती हैं। लाला हरीचंद उनकी माँगे स्वीकार कर लेते हैं। दूसरे दिन योगेश सत्यव्रत को वापस आने के बारे में बधाई देता हैं। अंत में सत्यव्रत सच्चाई को दफन होते हुये देखता हैं।

१.१३.२ ` मन के कोण `

यह दुष्यन्तजी का एकांकी-नाटक है। इसमें पाँच दृश्य हैं। इसका नायक कमल एक कवि हैं,जो आदर्शवादी और कल्पना में विचरण करनेवाला हैं। उसका मित्र सतीश उसे कल्पना से यथार्थ के धरातलपर लाने का प्रयत्न करता है। ` मन के भाव` नही बदलते इस विश्वास को तोडकर यथार्थ से परिचित कराना इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य है।

कथानक का आरंभ नायक कमल के कविता लिखने और गुनगुनाने होता है। काव्यात्मक प्रारंभ यह इस एकांकी की विशेषता हैं। सतीश कमल को बताता है कि उसे इन्कमटैक्स अफसर का पद मिला है, तथा उसकी (कमल की) प्रेमिका अर्पणा का दूसरी जगह रिश्ता तय हुआ है। कमल संपादक की नौकरी ठुकराता है। इस बात को सतीश कमल का मिथ्या अहं कहता है।

दूसरे दृश्य में ग्रामीण वातावरण हैं। पिताजी बीमार है,इसलिये कमल कानपुर से गाँव जाता हैं। वहा भाभी और माँ द्वारा खोजी हुयी लडकी से विवाह की बात चलाते हैं। लेकिन कमल विवाह से इन्कार करके अर्पणा के बारे में बताता है और यह भी स्पष्ट करता हैं कि अब उसका विवाह दूसरी जगह तय हुआ हैं। एकांकी के तीसरे दृश्य में कमल की मनोदशा का विश्लेषण हैं।

चौथे दृश्य में कमल,अर्पणा और अर्पणा के पति मनोहरलाल के मध्य हुयी बातचीत को दिखाया है। एकांत पाकर कमल अर्पणा को उसके विवाह के बाद ` विहा` पत्रिका में विवश विदाई ` शीर्षक से छपी अपनी कविता की चर्चा करता हैं। लेकिन अर्पणा इस संदर्भ में कोई रुचि नही रखती और कमल से सबकुछ भूल जाने को कहती है। कमल को तीव्र आघात पहुँचता है। सेठ मनोहरलाल को पता चलता हैं कि इन्कमटैक्स अफसर सतीश कमल का मित्र हैं,तो वह अपने स्वार्थ के लिये रंग बदलता हैं।

कमल सतीश को अर्पणा के घर हुयी बातें बताता है। सतीश उसे समझाने की कोशिश करता है। पाँचवे दृश्य में अर्पणा के पत्र से कमल का विश्वास टूट जाता है। कमल कहता है कि ' मुझे लगता है कि जैसे किसी ने सैकड़ों नील ऊँचाई से उठाकर मुझे कठोर नंगी चट्टानपर पटक दिया है। मेरे सारे सपने चूर-चूर हो गए हैं।' २६

इस प्रकार कल्पना लोक में विचरण करनेवाला आदर्शवादी कमल यथार्थ की ओर आता है और जिन्दगी की वास्तविकता पहचानता है।

१.१३.३ ' एक कंठ विषपायी '

यह दुष्यन्तजी का गीतिनाट्य है। जिसकी कथा पौराणिक है। दुष्यन्तजी ने इसमें शिव पुराण की ' सतीदाह ' इस पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक नये भावों को प्रस्तुत किया है। अर्थात प्राचीन के माध्यम से नये का बोध कराया है। इसके चार अंक हैं।

इसकी कथा इस प्रकार है -- राजा दक्ष ने एक यज्ञ आयोजित किया था। उसमें दक्ष ने अपने जामाता शंकर को आमंत्रित नहीं किया था, लेकिन नारी वीरणी को मातृस्नेह के कारण यह बात पसंद नहीं आयी। वह नहीं चाहती कि यज्ञ में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न हो। वीरणी अपने पति दक्ष को समझाती है, शंकर की महीमा बताती है। लेकिन दक्षपर इसका कोई परिणाम नहीं होता। शंकर ने सति का अपहरण किया था। इसी कारण वे चिढ गये थे। उनकी जग हँसाई हो गयी थी।

सती अपने पति शंकर के लिये यज्ञ में उच्च स्थान का आग्रह करती है। इससे दक्ष क्रोधित होते हैं। वे कहते हैं -- ' मेरा निश्चय दृढ है, मेरे यज्ञ में शंकर को जगह नहीं मिलेगी। इतना ही नहीं तो युग-युग तक किसी यज्ञ में शंकर को निमंत्रण तक न मिलेगा।' इस बात से अपमानित होकर सति स्वयं को यज्ञ में भस्म कर देती है।

नाटक के दूसरे अंक में ब्रह्मा, विष्णू, इन्द्र-वरुण सभी यज्ञ के विध्वंस को देखते हैं। विष्णू और ब्रह्मा शंकर के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं, तो इन्द्र, वरुण, शंकर के प्रति रोष अभिव्यक्त करते हैं। और शंकर को दण्ड देने के लिये ब्रह्मा से कहते हैं।

तीसरे अंक में शंकर का पत्नी--वियोग प्रस्तुत किया गया है। शंकर सती के देह को सीने से लगाते हैं और प्रतिशोध लेने के लिये प्रेतों, डाकनियों को बुलाकर संपूर्ण त्रिलोक को भस्म करने का निश्चय करते हैं। वे क्रोध से कहते हैं कि यदि उनकी प्रिया फिर से जीवित न हुयी तो उसका फल देवों को भुगतना पड़ेगा। । वे सेना को आदेश देते हैं --

> " हा। कह देना विष्णू और ब्रह्मा से
> संध्या तक
> सती में यदि न आई चेतना
> तो मेरा क्रोध देव भोगेंगे।" २७

अंतिम भाग में दुष्यन्तजी ने युध्द को चाहनेवाले, विरोधी नेताओं की अभिव्यक्ति दिखायी है। राष्ट्र प्रमुख शांति बनाये रखते हैं। ब्रह्मा प्रमुख हैं। वे युध्द को अनावश्यक ठहराते है और सेना को शांति का आदेश देते हैं। जनता के कहनेपर ब्रह्मा आदर्श के लिये अपना पद छोडने के लिये तैयार हो जाते हैं। विष्णू शंकर का मोह भंग करते हैं। इससे सेना वापस आती है और शांति पैदा होती है। इस कृति का मुख्य विषय है -- रुढियों का अंत, आज रूढियों, परंपराओं से चिपटे रहना ठीक नहीं हैं। इससे प्रगति नहीं होती। सारांश यह कि यह कृति रोचक और आकर्षक हैं। नाटक पढते समय नाटक देखने का अनुभव होता है।

१.१४ दुष्यन्तकुमार - उपन्यासकार के रूप में --

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार एक सफल उपन्यासकार भी रहे है। उनकी लेखनी सदैव नई-नई विधाओं को ढूँढती रही। दुष्यन्त जी के तीन उपन्यास है, जिनमें मनुष्य के जीवन की सच्चाईयाँ व्यक्त हुयी हैं --

१) छोटे-छोटे सवाल

२) आंगन में एक वृक्ष

३) दुहरी जिन्दगी आदि । इन उपन्यासों की विशेषता यह हैं कि पढते समय हमें ऐसा महसूस होता हैं कि हम कविता पढ रहे है । इसका कारण दुष्यन्तजी का कवि व्यक्तित्व है ।

१.१४.२ छोटे-छोटे सवाल --

दुष्यन्तजी का यह एक लघु उपन्यास हैं,जो सन १९६४ में प्रकाशित हुआ । इसमें उन्होंने पूँजिपतियों द्वारा शोषण पध्दति का,प्राइवेट कॉलेजों और शिक्षा संस्था की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया हैं । यह उपन्यास मात्र प्राइवेट कॉलेजों के बारे में ही नहीं है । यह उस समय की सामती,पूँजीवादी व्यवस्था का कच्चा चित्रण भी हैं । जिससे शिक्षा को भी एक धन्दे में परिणत कर दिया हैं ।[२८]

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र हैं सत्यव्रत, जो राजपुर कस्बे के ' हिन्दु ईंटर कॉलेज' का अध्यापक हैं । यह कॉलेज राजनीति का एक अड्डा है, जहाँ शिक्षा के नामपर व्यवसाय मात्र चलता है । कॉलेज कमेटी के मेम्बर,अध्यक्ष हरीचंद ,सेक्रेटरी गनेशीलाल आदि सब मिलकर शोषण करते हैं । कॉलेज के अध्यापकों को समयपर वेतन न देना,कृषि योजना के नामपर गाँव के विद्यार्थियों का शोषण करना, अपने स्वार्थ के लिये शिक्षा-संस्था का उपयोग करना । इस प्रकार के कई काले कारनामें कॉलेज कमेटी के ये लोग करते रहते हैं । राजपुर में ' मुस्लिम ईंटर कॉलेज' भी हैं । दोनों कॉलेजों में बलाव हैं और दोनों साम्प्रदायिकता पर खडे है । इन कॉलेजों में अध्यापकों की नियुक्तियाँ उन लोगों द्वारा होती है, जो भाई-भतीजावाद,धर्म जाति को मानते है और जो स्वयं अनपढ हैं ।

सत्यव्रत अच्छे विद्यार्थी बनाने का संकल्प लिये हिन्दु ईंटर कॉलेज में आता है । उसका यह संकल्प तब टूटता हैं, जब उसे सत्य की पराजय और असत्य की विजय का अनुभव होता है और उसे कॉलेज से हटा दिया जाता हैं । सत्यव्रत को पहली बार महसूस होता है कि सत्य से लडना इतना आसान नहीं हैं । वह टूट जाता है और अपने गाँव वापस जाना चाहता है ।

इस उपन्यास में दुष्यन्तजी ने गुरु-शिष्य के प्रेम को भी प्रस्तुत किया है। विमला अपने गुरु सत्यव्रत से प्रेम करने लगती है। विमला कॉलेज प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष चौधरी नत्थुसिंह की बेटी है। विमला सत्यव्रत के करीब आने के लिये छटपटाती रहती है। सत्यव्रत एक मासूम अध्यापक है। फिर भी उसे विमला का करीब आना बडा ही सुखद लगता है। प्रेम के प्रति सत्यव्रत की उदासीनता देखकर विमला अंत में उसे नंपुसक कहकर व्यथा को पी जाती है।

इस उपन्यास में लेखक ने कॉलेज की कथा के साथ छोटी-छोटी महत्वपूर्ण कथाओं को भी प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का अंत भी बडा ही प्रभावपूर्ण है। अंत में आदर्शवाद ईमानदारी को तोड दिया गया है।

१.१४.२ आंगन में एक वृक्ष --

दुष्यन्तजी का यह दूसरा उपन्यास भी आकार में छोटा है। यह उपन्यास एक जमींदार परिवार के चरित्र की कहानी प्रस्तुत करता है। जमींदार के अत्याचार, किसान मजदूरों का अभावग्रस्त जीवन, जमींदारों की अय्याशी क्रूरता, हेकडी, धर्म, एवं रूढिगत मान्यता, रीतिरिवाज आदि सभी पक्षों को दुष्यन्तजी ने इस उपन्यास में दिखाया है। इसमें जमींदार के लडके चंदन का चरित्र बडा ही प्रभावपूर्ण है। चंदन के कई शौक है। शिकार खेलना, शराब पीना, खूब खर्च करना आदि आदतों के लिये वह प्रसिध्द है। शराब पीने का शौकीन रहने के कारण उसके शराबखोरी के अनेक किस्से प्रसिध्द हुए है।

दुष्यन्तजी ने इस उपन्यास में समस्याओं के कारणों को ढूंढने का प्रयत्न किया है। लेखक के अनुसार उपन्यास में चित्रित समस्या की जड है।

अर्थतन्त्र। इस उपन्यास का कथानक दुष्यंतजी के परिवार की कथा है। चंदन के रूप में दुष्यन्तजी के बडे भाई का चित्रण हुआ है। चौधरी जी के रूप में उनके पिता भगवत सहाय जी का चित्रण हुआ है। बीजी के रूप में उनकी माता का तो स्वयं दुष्यन्तजी 'छोटे' के रूप में चित्रित हुए है। इसमें चंदन के मृत्यु के अतिरिक्त

शेष कथा दुष्यन्तजी के परिवार से जुडी है। उपन्यास में वंदन की मृत्यु शराब या बीमारी से होती है। वास्तव में दुष्यन्तजी के बडे भाई की मृत्यु सिगनल से टकराने से हो गयी थी।

सार यही कि 'आंगन में एक वृक्ष' जमींदारों के अत्याचार, उनका जीवन एवं बालमनोविश्लेषण का एक लघु उपन्यास है।

९.९४.३ दुहरी जिन्दगी --

यह दुष्यन्तजी का तीसरा उपन्यास है। इसमें संबंधों के खोखलेपन और सच्चाईयों से भागने की मनुष्य की वृथा कोशिशों की मार्मिक कथा है।

इसका कथानक इस प्रकार है -- स्वदेश (अर्पिता) कमल और राजीव से संबंध रखती है। स्वदेश पाठक जिसे दुष्यन्तजी के मित्र कमलेश्वर जी ने अर्पिता नाम दिया है, उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद नगर में अपनी सौतेली मां के साथ रहती है। स्वदेश २२ वर्ष की लडकी है। वह नौकरी करती है। वह कामुक और उग्र स्वभाव की युवती है। कमल उसका पहला प्रेमी है। कमल के साथ उसके विवाह की चर्चा भी चलती है।

रेलयात्रा में राजीव और स्वदेश की भेट होती है। राजीव कवि है। रेलयात्रा में दोनों में साहित्य और परिवार संबंधी बातें चलती है। राजीव बता देता है कि कमल के पत्रों के माध्यम से वह उससे परिचित है। स्वदेश भी स्पष्ट करती है कि कमल ने उसका परिचय पूर्ण में करा दिया है।

राजीव के एक लडकी है, जिसका नाम 'अन्नी' है। राजीव इलाहाबाद में शोध करने के लिये आया है। स्वदेश उसे अपने यहाँ रखती है। स्वदेश को राजीव की बेटी 'अन्नी' बहुत पसंद आती है। काम से लौटने पर वह अन्नी से खेलती है। रोज के सम्पर्क से राजीव-स्वदेश में शारीरिक सम्पर्क स्थापित होते है, लेकिन स्वदेश राजीव को 'भैय्या' संबोधित करती है, जिससे वह सोचते रहता है। कमल भी स्वदेश से प्रेम करता है। इसी कारण राजीव कमल से ईर्ष्या करता है।

राजीव और कमल दोनों स्वदेश के प्रेमी है। दोनों में अधिकार पाने का द्वन्द्व चलता है। राजीव सोचता है कि शारीरिक स्तरपर सबकुछ पा लेने के पश्चात भी कहीं कुछ ऐसा है, जिसे वह प्राप्त नहीं कर पाया और कमल ने उसे सहज पा लिया हैं।

राजीव और कमल का एक मित्र है - हरीश। वह भी इलाहाबाद आया हुआ है। वह स्पष्टवादी है। संबंधों के खोखलेपन और सच्चाई को नकारकर जीना उसे अप्रिय है। हरीश राजीव और कमल से कहता है कि तुम दोनों सीमित जिन्दगी जी रहे हो। स्वदेश तुम दोनों से पूर्णता प्राप्त करती है -- तुमसे मानसिक स्तरपर और राजीव से शारीरिक स्तरपर। आगे चलकर स्वदेश किसी बात को लेकर राजीव को घर छोडने के लिये कहती है। राजीव गाँव वापस जाता है।

इस प्रकार यह उपन्यास संबंधों के खोखलेपन को प्रस्तुत करता हैं।

१.१५ निष्कर्ष ---

उपरयुक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार जी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक साथ गजल कार, उपन्यासकार, कवि, नाटककार, के रूप में हिन्दी जगत में चर्चित हुये। इस बात का प्रमाण उनकी साहित्य कृतियाँ हैं, जिनमें क्या नहीं है ? उनके बहुमुखी व्यक्तित्व को साकार करने में उनकी रचनाएँ अधिक सहायक हुयी हैं। उन्होंने अपने समय की सच्चाइयों एवं परिस्थितियों को चित्रित किया है, जिससे उनकी रचनाएँ सजीव बन पडी हैं। अपने समय को राजनीति शिक्षा संस्थाओं का भ्रष्टाचार, शिक्षकों की अवस्था, सामाजिक, समस्या, पुरानी रुढियाँ, परंपरायें, जनता की स्थिति, मंत्रियों का विलासी जीवन, उनके झूठे आश्वासन, आम आदमी की बेचैनी, संबंधों का खोखलापन, जमींदारों का जीवन, पीडितों की दशा आदि सभी प्रवृत्तियों को उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया

हैं । ` साये में धूप ` के जरिए दुष्यन्त जी ने गजल को हिन्दी में चर्चित किया । इनसे पहले गजल में हुस्न-इश्क की बातें हुआ करती थी, लेकिन दुष्यन्तजी ने गजल को भी मनुष्य की पीडा को व्यक्त करने का माध्यम बनाया । यह हिन्दी गजल के लिये दुष्यन्तजी की मौलिक देन कही जा सकती हैं ।

संदर्भ

१ दुष्यन्तकुमार और उनका साहित्य - डॉ.शर्मा, पृ.१४

२ - वही - ,, पृ.१५

३ सारिका मई, १९७६, पृ.५५

४ - वही - पृ.२३

५ - वही - पृ.५४

६ - वही - पृ.२०

७ - वही - पृ.

८ - वही - पृ.५१

९ दुष्यन्तकुमार और उनका साहित्य - डॉ.शर्मा, पृ.२६

१० सारिका - मई - १९७६,पृ.६

११ दुष्यन्तकुमार और उनका साहित्य - डॉ.शर्मा,पृ.७४

१२ - वही - ,, पृ.७४

१३ सारिका - मई - १९७६,पृ.८३

१४ सूर्य का स्वागत - दुष्यन्त - पृ.११

१५ - वही - पृ.१६

१६ - वही - पृ.७८-७९

१७ आवाजों के घेरे - दुष्यन्त - पृ.२१

१८ - वही - पृ.२८

१९ जलते हुए वन का वंसत - दुष्यन्त - पृ.७

२० दुष्यन्तकुमार और उनका साहित्य - डॉ.शर्मा - पृ.९२

२१ सारिका - मई - १९७६,पृ.३७

२२ साये में धूप - दुष्यन्त - पृ.१३

२३ - वही - पृ.१३

२४ - वही - पृ.२१

२५ मेरी गजलें - सारिका - मई - १९७६,पृ.३९

२६ मन के कोण - दुष्यन्त - पृ.१४६

२७ एक कंठ विषपायी - दुष्यन्त - पृ.९०

२८ बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार - डॉ.अमर जायसवाल - पृ.८६ ।